संस्कृति और नैतिकता का बदलता स्वरूप: शेखावाटी के संदर्भ में

अंतिमा शर्मा, शोधार्थी, इतिहास विभाग, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय कटराथल, सीकर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रो. डाडवेल कथन है कि भारतीय संस्कृति महासमुद्र के समान है जिसमें नदियां आकर विलीन होती रही है विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक भारतीय संस्कृति एक महासमुद्र के समान है जिसकी विशालता और गहराई का अंदाजा लगा पाना एक कठिन कार्य है हमारी भारतीय संस्कृति अनेकों चरणों से गुजरती हुई हड़प्पा से लेकर वर्तमान तक कई रूपों में बदली है लेकिन अभी तक अपने मूल स्वरूप को बचाए रखने में सफल रही है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सहिष्णुता व लचीलापन है जो आध्यात्मिकता में भौतिकता का अनूठा समन्वय है। इसी महासमुद्री संस्कृति की एक प्रमुख धारा देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान में बह रही है। राजस्थान अपनी वीरता व परंपराओं के संरक्षण के लिए सदैव ही वंदनीय रहा है यहां की संस्कृति विश्व में सबसे अनूठी है राजस्थान वही धरती है जहां शरणागत की रक्षा;हम्मीर से लेकर पर्यावरण रक्षण ;अमृता देवी बिश्नोई हेतु बहादुरों ने अपने प्राणों तक का बलिदान गर्व पूर्वक दिया है । राजस्थान की माटी का प्रत्येक कण अपनी सांस्कृतिक वैभव का अद्भुत उदाहरण रहा है । इसी वीरभूमि राजस्थान के पूर्वोत्तरी अंचल में फैले शेखावाटी क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएं यहां की सांस्कृतिक विभिन्नता व नैतिकता के अनूठे आयाम है जिसकी संस्कृति व नैतिकता का इतिहास गणेश्वर सभ्यता से लेकर वर्तमान ग्लोबलाइजेशन के युग तक लगातार बदलता रहा है । इस शोध पत्र में हम इन्हीं बदलावों का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे तथा शेखावाटी के क्षेत्र में किस प्रकार इन बदलाव के साथ विकास का अनुपम उदाहरण दिया है उसके विषय में इस शोध पत्र में गहन अध्ययन किया जाएगा ।